॥ श्रीः ॥

भाषाप्रदीप ।

द्वितीय भाग

जिस्को

बरेली निवासी लब्ध पेन्शन असि-
स्टैण्ट इञ्जिनियर मोहनलाल
कटिहा शर्म्मा ने विद्यार्थियों
के हितार्थ बनाया ।

Registered.

यज्ञेश्वर प्रेस, बनारस ।

मूल्य ।।

श्रीमद्गणाधिपतयेनमः । श्रीगुरुचरणकमलेभ्योनमः ।

भूमिका ।

कोटियों धन्यवाद श्रीसच्चिदानन्द स्वरूप परब्रह्मपरमात्मा को देकर सकल पाठकजनों की सेवा में सविनय निवेदन है कि इस समय आर्यावर्त में देशी और परदेशी भाषाओं के अनेक व्याकरण प्रचलित हैं । सब से बहुत कुछ लोक का उपकार होजाता है पर मेरी अल्प बुद्ध्यनुसार एक वि ाय में बड़ी त्रुटि है उसी के न होने से विद्यार्थियों को बहुत परिश्रम करना पड़ता है यह त्रुटि अन्वय की ऐसी रीति है जिस से किसी वाक्य के पदों का सम्बन्ध पूर्ण ज्ञात होजावै, यही विशेष करके इस पुस्तक में लिखी गई है और आशा होती है कि यदि विद्यार्थी इस में भली भांति अभ्यास कर लेवैं तो उनको किसी भाषा के सीखने में बहुत कम परिश्रम पड़ै । सम्बन्ध मुख्य करिके अपनी भाषा में जानना उचित हैं ।

पाठकगणों से यही प्रार्थना है कि इस पुस्तक की परीक्षा करके मुझको कृतार्थ करैं । इति ।

वै० कृ० ६ भौ
संवत् १९५८

वशम्वद,
मोहनलाल कटिहा शर्म्मा

विषयानुक्रमणिका ।

श्रीरामोजयति ।

श्रीमद्गणाधिपतये नमः । श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः ।

अथ भाषाप्रदीपः ।

द्वितीय भागः ।

चौधवाँ पाठ १४ ।

कृत्प्रत्यय ।

कर्तृवाचककृत् ।

ईश्वर पापियों को मारता है ।

वह ईश्वर को पूजता है । पुण्य बढ़ता है ।

जैसा कि पूर्व कहा गया प्रत्येक क्रिया से किसी कार्य्य का करना अथवा होना ज्ञात होता है ।

प्रत्येक क्रिया का कोई करने वाला भी अवश्यही होता है उसी को **कर्त्ता** कहते हैं जैसे ऊपर के वाक्यों में ईश्वर वह और पुण्य ।

कुछ क्रियां ऐसी होती हैं जिन्का कार्य्य केवल कर्त्ता ही से पूरा हो जाता है और उन्का फल किसी अन्य प्रातिपदिक पर नहीं पड़ता ऐसी ही क्रियाओं को **अकर्मिका-क्रिया** कहते हैं जैसे बढ़ता है ।

बहुत सी क्रियां ऐसी भी होती हैं जिन का कार्य्य कर्त्ता से छूट कर किसी अन्य प्रातिपदिक पर भी पड़ता है ऐसी ही क्रियाओं को **सकर्मिका** क्रिया और जिन प्रातिपदिकों पर उन्के कार्य्य का फल पड़ता है उन को कर्म्म कहते हैं जैसे ऊपर के वाक्यों में मारता है पूजता है और पापी ईश्वर।

जिन शब्दों से क्रियाओं के कार्य्य का होना मात्र ज्ञात हो उनको **भाव** कहते हैं जैसे करना—

छूटा हुआ, बैठता हुआ, नाचना, रिहाई, छुट्टी।

धातुओं के चिन्ह "ना" के स्थान पर "ता हुआ" इत्यादि अनेक चिन्ह लगादेने से उन से कभी कर्त्ता का, कभी कर्म का, और कभी भाव इत्यादि कई एक अर्थों का बोध होता है। ऐसेही चिन्हों को **कृत्प्रत्यय** कहते हैं।

कृत्प्रत्यय लगने से जो शब्द सिद्ध होते हैं वे प्रातिपदिक हुआ करते हैं और उनको **कृदन्त** कहते हैं।

गानेवाला, गवैया, लिटैया, लिटवैया, गानेहार, गिराऊ।

धातुओं के चिन्ह "ना" के स्थान पर "ने हार, ने वाला, ऐया, और वैया" इत्यादि अनेक शब्द लगाने से सामान्यतः कर्त्ता अर्थ का बोध होता है इसी से इनको **कर्तृवाचककृत्** कहते हैं।

मरखना, कटखना, हलना, झुमना,

कभी धातु भी कर्तृवाचक कृत्प्रत्ययान्त शब्दों के अर्थ में बोले जाते हैं इनमें जो स्वर वर्ण दीर्घ होते हैं वे सब ह्रस्व कर दिये जाते हैं।

सोता हुआ, पीसता हुआ, समेटता हुआ,

"ना" के स्थान पर " ता हुआ " लगादेने से भी कर्त्ता अर्थ का ही बोध होता है इस में इतना विशेष होता है कि कार्य्य का केवल वर्त्तमान काल में अथवा वाक्य की क्रिया के समानकाल में होना पाया जाता है।

उदाहरण।

अगली धातुओं से कर्तृवाचक कृत्प्रत्ययान्त शब्द बनाओं

जलाना, मिटाना, पिटाना. घुमाना, सोना. नहाना, बजाना; लपेटना, झुकना, चरना; पीसना, काटना, हिलाना, चुराना, बखेरना. जोतना, बोना, सींचना; फूलना; फलना, कातना, बुनना; सोना, चीरना, बोलना, धोना, पूजना, उठाना, घसीटना।

अगले शब्दों में बताओ कि कौन२ प्रत्यय हैं?

जवैया, नहवैया, सोने वाला; भरता हुआ, हंसैया, बैठता हुआ, खींचता हुआ, तोड़नेहारा, डपटता हुआ, लिटवैया, भुलना, चिपकना, उठैया, बधैया, लिवैया, बोलनेहार, धोता हुआ, पिसैया, नाचनहारा; सरकना, दौड़नेवाला; सुवाऊ, झुकाऊ, धरताऊ।

प्रश्न १—कृत्प्रत्यय किन को कहते हैं और उनके लगने से जो शब्द सिद्ध होते हैं उनको क्या कहते हैं?

प्रश्न २—कर्त्ता अर्थ में कौन२ प्रत्यय लगाई जाती हैं उन में क्या२ भेद होता है?

पन्द्रहवां पाठ १५ ।

कर्मवाचक कृत ।

किया हुआ, पीटा हुआ, खींचा हुआ ।

सकर्मक धातुओं की भूतकाल की क्रिया के पीछे "हुआ" लगा देने से उनके कर्म का बोध होता है इसी से उनको **कर्मवाचक** प्रत्यय कहते हैं ।

सोया हुआ, बहा हुआ, नहाया हुआ ।

कभी अकर्मक धातुओं के कर्मवाचक प्रयोग के समान भी प्रयुक्त होते हैं इन से कर्म का अभाव होने से कर्म का बोध नहीं होता किन्तु कर्त्ता का ही बोध होता है ।

गया हुआ, भागा हुआ ।

जाना अर्थ वाले धातुओं के कर्म वाचक शब्दों से भी कर्त्ता का ही बोध होता है ।

उदाहरण ।

अगले शब्दों में बताओ कि कौन२ प्रत्यय हैं ?

फूला हुआ, कहा हुआ, जिया हुआ, सोया हुआ, खाया हुआ, मारा हुआ, दौड़ा हुआ, हंसा हुआ, बना हुआ, बिगड़ा हुआ, खेला हुआ, घसीटा हुआ, आया हुआ, उड़ा हुआ, नोचा हुआ ।

आगे लिखी हुई धातुओं से कर्मवाचक शब्द बनाओ—

निचोडना, फींचना, छाना, वहना, चढ़ना, निकलना, खिसकना, वहकाना, पसीजना, तैरना, घूमना, फेरना, बिछाना, उठाना, बुहारना, लिखना, जमना, टूशना, कलपना; बरसना, चमकना, गरजना, झिड़कना, छिड़कना।

प्रश्न १—कर्मवाचक किन को कहते हैं और वे कैसे बनते हैं?

प्रश्न २—अकर्मक और जाना अर्थ वाले धातु के कर्मवाचक शब्दों से क्या२ बोध होता है?

सोलहवां पाठ १६।

करणवाचक प्रत्यय, भाववाचक प्रत्यय।

कतरनी, पिटना, चलना, चरनी, झुलना;।

जिन शब्दोंसे किसी कार्य्य के करने के हथियार का बोध हो उनको **करण** कहते हैं।

कहीं धातु स्वतः ही करण अर्थ में बोले जाते हैं केवल उनके जो स्वर दीर्घ होते हैं वे ह्रस्व कर दिये जाते हैं।

कभी धातु के "ना" के "आ" के स्थान में "ई" कर देने से भी करण का अर्थ जाना जाता है।

बनाउ, सुनाई, रगडाहट, घबराहट, कहावत, रंगना, रंगत, धुलवाई।

धातुओं के "ना" के स्थानपर "आउ" "आई" "आहट" "आवत" "ना" "त" और "वाई" इत्यादि अनेक शब्द लगाने से धातुओं के भाव का अर्थ जाना जाता है इसी से इनको भाववाचक कहते हैं।

उदाहरण।

चौधवें और पन्द्रहवें पाठ के उदाहरणों में लिखे हुये धातुओं के करणवाचक और भाववाचक शब्द बनाओ—

आगे लिखे हुये शब्दों में बताओ कि कौन२ प्रत्यय हैं ?

चिपकनी, बटना, घुमनी, मलाई, धौंकनी, छिड़कनी, रगड़ाई, चलनी, दिखाई, सुनवाई, सूजन, अवाई, उडान, सूँघनी, अगमानी, दबाउ, दबकी, लेखनी, पिसाई, बुहारी।

प्रश्न १—करणवाचक और भाववाचक शब्द किनको कहते हैं और वे कैसे बनते हैं ?

सतरहवां पाठ १७।

यौगिका क्रिया वाचक।

कल्लू पीटकर भागा, नत्थू नहानेको जाताहै।

जिन शब्दों से कार्य्य का किसी क्रिया के कार्य्य के साथ में अथवा आगे पीछे होना विधान किया जावै उनको **यौगिकाक्रिया** कहते हैं अन्वय करने में यौगिकाक्रिया

सर्वथा क्रिया में मिलती है और दोनों मिलकर विधेय होता है जैसे ऊपर के वाक्य की अन्वय इस रीति पर होगी—

कल्लू—उद्देश्य।

पीटकर—यौगिकाक्रिया भागा—क्रिया	क्रिया और यौगिकाक्रिया मिलकर विधेय।

उद्देश्य और विधेय मिलकर वाक्य।

यौगिकाक्रियां तीन प्रकार की होती हैं। (१) समकालिका, (२) पूर्वकालिका और (३) परकालिका।

पीट, खाकर, सोके, नहाय करके

धातु के चिन्ह "ना" के स्थान पर "कर" "के" अथवा "करके" लगादेने से अथवा धातु का चिन्ह "ना" दूर करदेने मात्र से अथवा ईकारान्त भिन्न धातुओं के पीछे "य" बढ़ा देने से जो शब्द बनते हैं उनसे कार्य का क्रिया के कार्य्य से पहिले होना पाया जाता है इसी से उनको **पूर्वकालिका यौगिकाक्रिया** कहते हैं।

लेटनेको, बैठने, पीटनेको, नहाने।

धातु के चिन्ह ना के स्थान में "नेको" अथवा "ने" बढ़ाने से जो शब्द बनते हैं उनसे कार्य्य का क्रिया के कार्य्य से पीछे होना पाया जाता है इसी से उनको **परकालिका यौगिकाक्रिया** कहते हैं।

भागता, मारताहुआ, नहाताहुआ, सोतेहुये।

धातु के चिन्ह "ना" के स्थान पर "ता" "तेहुये" और "ता हुआ" लगादेने से कार्य्य का क्रिया के समानकाल में होना पाया जाता है इसी से उनको **समकालिका यौगिकाक्रिया** कहते हैं।

कन्हो भागता हुआ आया। हरिने हंसते हुये किताब फेंकी। गुलाब रोता हुआ भागा। छोटे खेलते गेंद चुराता है।

ता और ता हुआ प्रायः अकर्मिका क्रियों के साथ में ही और "ते" और "तेहुये" सकर्मिका क्रियायों के साथ बोले जाते हैं।

वह सुनतेही या सुनते हुयेही भागा।

घोड़ा भागतेही गिरा।

जब "ते" और "ते हुये" युक्त शब्दों के पीछे "ही" शब्द भी बोला जाता है तो कार्य्य का उसके पीछे निकटही करना पाया जाता है।

उदाहरण।

चौथवें पाठ में लिखी हुई धातुओं के यौगिकाक्रिया वाचक शब्द बनाओ—

अगले वाक्यों को अन्वय करो—

मज़दूर राह करने को पेड़ काटते हैं। कल्लू किताब लेकर पाठशाला जाता है। हिरन उछलता हुआ भागा। विद्यार्थी पढ़ता हुआ पाठशाला को गया। द्वारिका ने किताबों को फाड़कर रद्दी किया। हलवाई ने दूध में पानी मिलाकर बेचा।

पतङ्ग उड़कर आग में गिरे। वह लेटतेही सो गया। सिपाही जाते ही लौटा। पुलिस के पहुँचते ही चोर भागा।

प्रश्न १—यौगिकाक्रिया किनको कहते हैं वे कितने प्रकार की होती हैं और कैसे२ बनती हैं ?

प्रश्न २—यौगिकाक्रिया कहां बोली जाती हैं और उनकी अन्वय कैसे होती हैं ?

प्रश्न ३—समकालिका यौगिकाक्रियाओं में से "ताहुआ" वाली कहां और "तेहुये" वाली कहां बोली जाती है ?

प्रश्न ४—"तेहुये" वाली यौगिकाक्रिया के पीछे ही बढ़ने से अर्थ में क्या भेद होता है ?

अठारहवां पाठ १८।

तद्धितप्रत्यय।

(१) सम्बन्ध वाचक, (२) गुणवाचक, और (३) भाववाचक।

सुनहरा, मटिया, लोहिया, मिरचीला।

प्रातिपदिकों के पीछे "हरा" आदि कुछ प्रत्यय लगाने से ऐसे नवीन प्रातिपदिकों का बोध होता है। जिनका पूर्व प्रातिपदिकों से किसी प्रकार सम्बन्ध हो ऐसे हो प्रत्ययों को "तद्धितप्रत्यय" और उनके लगने से जो प्रातिपदिक बनते हैं उनको तद्धितान्त कहते हैं।

तद्धितप्रत्यय अनेक प्रकार के होते हैं उन में से अगले छः विशेष कार्य्य में आते हैं—(१) सम्बन्धवाचक, (२) गुणवाचक (३) भाववाचक, (४) सादृश्यद्योतक (५) आवृत्यादिद्योतक, औ (६) काल वा स्थानद्योतक।

दूधवाला, मटिहा, तिलहन, सत्यता।

वाला, हरा, इहां, हन, ता इत्यादि प्रत्यय लगने से ऐसे प्रातिपदिकों का बोध होता है जो किसी अभीष्ट प्रातिपदिक से बने हों अथवा उसका कोई अंश हों ऐसे ही प्रत्ययों को **सम्बन्धवाचक प्रत्यय** कहते हैं।

धानी, मिरचीला, रङ्गीला, चन्द्रसा।

ई, ईला, सा, इत्यादि अनेक प्रत्यय लगने से ऐसे प्रातिपदिकों का बोध होता है जिनमें किसी अन्य प्रातिपदिक का गुण मात्र हो ऐसेही प्रत्ययों को **गुणवाचक** कहते हैं।

मिठाई, कटुत्व, कड़ुआपन, लाली।

पा, ता, आई, त्व, पन, ई, इत्यादि कई प्रत्यय जब गुणवाचक शब्दों में लगते हैं तो उनका भाव अर्थात् गुणपना दिखाते हैं इसीसे इनको **भाववाचक** प्रत्यय कहते हैं।

उदाहरण।

अगले प्रातिपदिकों में किसी प्रकार के तद्धित प्रत्यय लगाओ।

मनुष्य, मिश्र, बालू, झूठ, तेल, नोन, मोठा, खट्टा, चपैटा,

अच्छा, बुरा, चांदी, सोठ, हरा, मैला, कलम, कागज़, कड़ुआ, कायथ, ब्राह्मण, बनिया, घर, बन, मैदान, लकड़ी, लोहा, पीतल, मूँगा, टोपी, भांग, चरस, खपडा, बारह, मास, हवा।

अगले प्रातिपदिकों में बताओ कि कौन प्रत्यय लगते हैं ?

सत्यता, कालापन, घबराहट, बनावट, नमकीन, लालाई, हिन्दूआपन, हत्यारा, कबाड़िहा, पपड़िया, पुजापा, रोगिया, बचकाना, कपडौटी, मर्दाना, जनाना, चुनहा, कत्थई, धानी, दूधिया, अफीमी, पोदीनासा, अमौआ, किताबी।

प्रश्न १—तद्धित प्रत्यय किनको कहते है वे कहां२ लगाये जाते हैं और उनके क्या भेद होते हैं ?

प्रश्न २—सम्बन्ध वाचक, गुणवाचक, और भाववाचक, तद्धितप्रत्यय किनको कहते हैं और वे कैसे बनते हैं ?

उन्नीसवां पाठ १९।

(४) सादृश्यद्योतक, (५) आवृत्यादिद्योतक, (६) कालवा स्थानादिद्योतक।

जैसा, जितना, ब्राह्मणसा, वक्रीसा।

प्रातिपदिकों तथा सर्वनामों के पीछे सा और सर्वनामों के पीछे "ना" लगा देने से सादृश्य अर्थ का बोध होता है। इसी से इनको **सादृश्यद्योतक** कहते हैं "सा" के पूर्व जो और जौन के स्थान पर "जै", "कौन" और "क्या" के"

स्थान पर "कै", "वह" के स्थान पर "वै" "तौन" का "तै", यह का "ऐ", मैका "मुझ", और तू का "तुझ" हो जाता है।

ना के पूर्व जो और जौनका "जित", कौन और क्या का "कित", वह का "उत", तौ का "तित", यहका "इत", होजाता है और शेष सर्व नामों के पीछे यह प्रत्यय नहीं लगाया जाता।

बीसौ, सौवां, पांचवां, चौथा, कौनसा, पांचवार, जितना।

संख्यावाची तथा सर्वनाम संज्ञक शब्दों के उत्तर वां, सा, वार, इत्यादि प्रत्यय लगने से विशेष वस्तु इत्यादि का बोध होता है इनको **आवृत्यादिद्योतक** कहते हैं इन के पूर्व सर्वनामों में वही भेद होते हैं जो ऊपर कहे गये।

वहां, जहां, कहां, अब, जब, तब।

ऊपर लिखे हुये शब्द सर्वनाम संज्ञक शब्दों से बनते हैं और उन से स्थान वा समय का बोध होता है उनको **स्थानादिद्योतक** कहते हैं।

उदाहरण।

अगले शब्दों से क्या२ बोध होता है ?

कैसा, वैसा, चमारसा, छठा, नवां, तहां, कहां, कब, कौन, जौनसा, पांचौं, सातौं।

प्रश्न १—सादृश्यद्योतक, आवृत्यादि द्योतक, और स्थानादि द्योतक प्रत्यय क्या२ होते हैं और उनसे क्या२ बोध होता है ?

बीसवां पाठ २० ।

द्विकर्मकधातु ।

अध्यापक विद्यार्थियों को सन्ध्या पढ़ाता है ।
दाता भिखारियों को अन्न देता है ।

पढ़ाना देना इत्यादि अनेक क्रियां ऐसी होती हैं जिन के साथमें दो कर्म आते हैं एक इनमें से मुख्य प्रकार से और दूसरा उसके योग के हेतु से कर्म होता है ।

जो प्रातिपदिक द्विकर्मिका क्रियाओं के साथ मुख्य करके कर्म हों उनको **मुख्य कर्म** कहते हैं जैसे ऊपर के उदाहरणों में सन्धा और अन्न ।

जो प्रातिपदिक द्विकर्मिका क्रियाओं के मुख्य कर्म के साथ किसी प्रकार से सम्बन्ध होने से उन क्रियाओं के कर्म हों उनको **अमुख्यकर्म** कहते हैं जैसे ऊपर के उदाहरणों में विद्यार्थी और भिखारी ।

सोहन देवी को वैरी मानता है ।
बालक रस्सी को सांप समझता है ।

किन्हीं क्रियाओं के साथ ऐसे दो कर्म भी होते हैं जिन में से एक दूसरे का कर्तव्य अथवा गुण प्रकाश करने से उस का विशेषण सा होता है ऐसी दशा में विशेष्य को अमुख्य कर्म और विशेषण को मुख्य कर्म कहते हैं ।

मुख्य कर्म क्रिया के पूर्वही उसका अङ्ग सा होकर आता है और अमुख्य कर्म उसके भी पूर्व बोला जाता है । कर्म का चिन्ह "को" केवल अमुख्य कर्म के साथ में बोला जाता है

विद्यार्थी अध्यापक से पढ़ाया जाता है।
देवी सोहन से बैरी माना जाता है।

कर्मवाच्य प्रयोग में अमुख्य कर्महो उद्देश्य किया जाता है और मुख्य कर्म फिर भी क्रिया के साथ में उसका अङ्ग सा होकर आता है।

देवी बकरी को गांऊँ को लेजाता है।
धोबी गधे को थानको हांकता है।

हांकता है लेजाता है इत्यादि, क्रियाओं के साथ में भी दो कर्म आते हैं पर अमुख्य कर्म क्रिया केही पूर्व और मुख्य कर्म उसके भी पहिले बोला जाता है. और कर्म का चिन्ह "को" दोनों कर्मों के पीछे ही लगाया जाता है।

उदाहरण।

अगले वाक्यों की अन्वय करो और बताओ कि उनमें कौन मुख्य और कौन अमुख्य कर्म है।

अज्ञानी मनुष्य को सब मूर्ख कहते हैं। दयावान् राजा को धर्मावतार समझते हैं। गुरु हमको परमज्ञान बताता है। मैं उसे तुमको दूंगा। वुह हम को घोड़ा देता है। ग्वाला बैल को गौडी को लिये जाता है। मुझको पुस्तक लाओ। विद्यार्थी अध्यापक से प्रश्न पूंछता है। उसने मुझको अंग्रेज़ी शिखाई। उन्होंने

लड़के को इनाम दिया। तुमने लडकी को आभूषण भेजा। उसने मुझको राह बताई। चोर ने हाकिम से चाल की। कल्लू मुझ को मूर्ख बनाता है। मैजिस्ट्रेट ने उसको अपराधी ठहराया। शोक ने उसको मूढ कर दिया। सिपाही ने चोर को थप्पड मारा। जेलर ने कैदियों को बनारस भेजा। मैंने उसकी बातों को धोखा समझा।

प्रश्न १—द्विकर्मक धातु कैसे२ होते हैं, और उनके कर्मों को क्या२ कहते हैं ?

प्रश्न २—द्विकर्मक धातुओं के कर्मवाच्य प्रयोग कैसे बनते हैं ?

प्रश्न ३—लेजाना इत्यादि धातुओं में विशेष क्या होता है ?

इक्कीसवाँ पाठ २१।

कर्मकर्तृ धातु—

छुटना, छोड़ना, पिटना, पीटना, तुलना, तोलना, मिटना, मेटना।

बहुत से अकर्मक धातु ऐसे होते हैं, जिन में "ना" के पूर्व केवल दोही व्यञ्जनों के बीच में कोई ह्रस्व स्वर होता है और जिनके स्वर मात्र को दीर्घ अथवा ए ओ कर देने से ऐसे सकर्मक धातु बन जाते हैं जिनका कर्म पूर्वोक्त अकर्मक धातुओं का कर्ता ही होता है ऐसेही अकर्मक धातुओं के कर्त्ता को **कर्मकर्त्ता** कहते हैं।

उदाहरण।

अगले वाक्यों की अन्वय करो। और उन में कर्मकर्त्ता बताओ और अकर्मिका क्रियाओं का समान सकर्मक रूप बनाओ—

दवा पिसती है। कपड़ा बिकता है। अर्क खिचता है। किवाड भिडता है। हर्फ मिटते हैं। बैल बिकता है। लकड़ी चिरती है। चन्दन घिसता है। आटा चलनी से छन्ता है। घोड़ा घसीटे में फिरता है। दुर्बल भीड में पिचता है। देवता पुजता है। रवड सकुडती है। बिछौना समिटता है। छप्पर फुक गया। दरवाजा रुकैगा। छत्त लिपी है। दीवार पुत गई। पहिया घसिटता है। सड़क झाडू से वुहरती है। लकड़ो फटो। रोगी के दांत मिसे।

प्रश्न १—कर्म कर्त्ता किस्को कहते हैं और जो क्रियां उसके साथ आती हैं उनका दूसरा स्वरूप क्या होता है?

बाईसवाँ पाठ २२।

खण्डिता क्रिया—

देवी विद्वान है। नत्थू बीमार जानपड़ता है।
मनुष्य प्रवीण दिखता है।

पूर्व कहा गया कि होना अर्थ वाले धातुओं की क्रियाओं के साथ में बहुधा एक प्रातिपदिक भी आया करता है, इसी को पूरक और क्रिया को खण्डिता क्रिया कहते हैं।

जान पडना, दिखाना आदि बहुत से और धातु भी ऐसे होते हैं जिनके कार्य का फल किसी प्रातिपदिक इत्यादि पर

न पहुँचने से उन्के साथ में कर्म की कोई आवश्यकता नहीं होती पर जिनका अर्थ पूरा करने को उनके साथ में एक प्रातिपदिक अवश्य आता है।

"जिन क्रियाओं के साथ में कर्म की आवश्यकता न हो पर जिनका अर्थ पूरा करने को उनके साथ में एक प्रातिपदिक भी आता हो उन्को **खण्डिताक्रिया** कहते हैं और जो प्रातिपदिक उन्के साथ में आता है उस्को **पूरक** कहते हैं। खण्डिता क्रिया और पूरक मिलकर विधेय होते हैं।

देवी से विद्वान हुआ जाता है।

खण्डिता क्रियाओं का भाववाच्य प्रयोग बहुधा देखने में नही आता और यदि किया भी जावै तौ ऊपर के अनुसार होगा।

उदाहरण।

अगले वाक्यों को अन्वय करो—

मनुष्य जन्म से ज्ञानी उत्पन्न नही होता। कल्लू रोगी रहा। लड़का भला देखपड़ताहै। कुमनुष्य सुविद्यार्थी नही निकलता। कन्ही धोखा देनेवाला ठहरा। लडका अच्छा नहीं रहा। भेडिया भयानक जानपड़ा। मल्लू अंधा जान पडता है। जलखारी जचता है। विद्यार्थी सुस्त प्रतीत होता है। नन्नू चोर दिखाता है। वेनी बुड्ढा जान पडता है। वहादुर रोगी रहैगा। चिहरा पीला पड़गया। बरेली में विद्यार्थी उत्तम नही हो पाते हैं। बोली कडी जान पड़ती है। सिंह डरौना ज्ञात होता है। विष्णु सीधा दिखाई देता है।

प्रश्न १—खण्डिता क्रिया किसको कहते हैं और उस्के साथ में जो प्रातिपदिक आता है उस्का क्या नाम होता है इस्की अन्वय किस रीति पर होती है ?

प्रश्न २—खण्डिता क्रियाओं का भाववाचक प्रयोग कैसे बनता है ?

तेईसवाँ पाठ २३।

विशेषण।

आदमी, बुड्ढा आदमी ; बिल्ली, काली बिल्ली ;
नीव, मीठा नीब ; पानी, खारी पानी।

सामान्यतः प्रातिपदिकों से जितनी वस्तु इत्यादि का बोध होता है उन्की अपेक्षा प्रातिपदिकों के पूर्व कुछ शब्द मिलने से कम वस्तु समझी जाती हैं।

"जिन शब्दों से प्रातिपदिकों के अर्थ का विस्तार कम होजावै उन्को **विशेषण** कहते हैं"।

"जिन प्रातिपदिकों का अर्थ उन्के पूर्व विशेषण लगने से कम होजावै उन्को **विशेष्य** कहते हैं"।

विशेषण बहुधा विशेष्य के पूर्वही बोले जाते हैं और अन्वय करने में विशेषण और विशेष्य मिलकर एक प्रातिपदिक के समान उद्देश्य कर्म इत्यादि होते हैं, जैसे काली बिल्ली उछलती है की अन्वय इस रीति पर होगी।

काली—विशेषण } विशेषण और विशेष्य मि-
बिल्ली—विशेष्य } लकर उद्देश्य

उछलती है—क्रिया विधेय।

उद्देश्य और विधेय मिलकर वाक्य।

अच्छी लडकियों ने पुष्प चुने।

काले घोडों को लाओ।

लिङ्ग के हेतु से विशेषणों में वही भेद होते हैं जो सामान्यतः प्रातिपदिकों में होते हैं और जिस प्रकार प्रातिपदिकों के पुल्लिङ्ग से स्त्रीलिङ्ग बन्ते हैं उसी प्रकार विशेषणों के भी बनते हैं।

विशेषणों के पीछे "ने को" इत्यादि कोई चिन्ह नहीं लगाये जाते यह केवल विशेष्य के पीछे ही लगाये जातेहैं।

आकारान्त शब्दों में जहां२ 'आ के' स्थान पर 'ए ओ' इत्यादि हो जाते है वहां२ सब ठौर विशेषणों में भी आ के स्थान पर 'ए' ही हो जाता है—

उदाहरण।

अगले वाक्यों को अन्वय करो—

राजा सब विघ्नों से प्रजा को बचाता है। अच्छे विद्वान् से पढ़ो। वह बड़े ऋषियों से पूजा पाता है। दुष्टजन बालकों को पीटता है। काले भौंरे फूलों पर रस को चाटते हैं। बहुत लडके श्रीरामाज्ञा पाठशाला में पढ़ते हैं। तेज़ चाकू से कलम बनाओ। शीतल पवन चलती है। सफेद कुर्ता पहिनो। बुद्धिमान मनुष्य परिश्रम करता है। मनोहर वाणी के लिये यत्न करता है।

प्रश्न १—विशेषण और विशेष्य किन२ को कहते हैं, वे कहां२ बोले जाते हैं और उन्की अन्वय कैसे होती है?

,, २—लिङ्ग वचन इत्यादि के हेतु से विशेषणों में क्या२ भेद होते हैं ?

चौबीस्वाँ पाठ २४।

सर्वनाम और संख्या वाची शब्द विशेषण।

उस मनुष्य को बुलाओ। किन लडकों ने पुस्तकें चुराईं। जो पुस्तक खोगई थी। यह क्या वस्तु है।

सर्वनाम संज्ञक शब्दों में से "मैं" और "तू" किसी अन्य प्रातिपदिक के विशेषण नहीं होसक्ते अन्य सब विशेषण और विशेष्य दोनों हो सक्ते हैं, विशेषण होने पर उन्के वही स्वरूप होते हैं जो सामान्यतः उद्देश्य इत्यादि दशा में होते हैं।

आप शब्द सर्वथा उसी पुरुष इत्यादि को दिखाता है जो वाक्य का उद्देश्य हो।

पांच कबूतर उडे। सैकडों हिरन भागे।

संख्या वाचक शब्द बहुधा विशेषण होकर ही आते हैं और सर्वत्र एक बचन के स्वरूप में ही बोले जाते हैं।

जब संख्या वाची शब्दों को बहुवचन में बोलते हैं तो अगणित का बोध होता है।

पांचौं मनुष्य गये। दोनों रोगी अच्छे हुये।

जब संख्या के पीछे "औ" शब्द मिलाकर विशेषण किया जाता है तो सब का अर्थ जाना जाता है।

उदाहरण।

अगले वाक्यों को अन्वय करो—

यह पुस्तक कहां से आई। कल कौन मनुष्य आया था। चीनी किस कोठरी में है। इस पुस्तक को देखो। उस ग्राम में डाकू रहते हैं। उस पेड़ पर बन्दर है। जिस बुहारी से बुहारा था। वुह किस जगह बैठा था। उन लड़कों को बुलाओ। पांच मनुष्य आवें। बीस बैल चरने को गये। पचासों आदमी चोरी में पकड़े जाते हैं। महामारी से हज़ारों मनुष्य मरे। यह मनुष्य चोर है। उन बीसों मनुष्यों को दण्ड मिला।

प्रश्न १—जब संख्या वाची और सर्वनाम संज्ञक शब्द किसी प्रातिपदिक के विशेषण होकर आते हैं तो उनके रूप कैसे२ होते हैं ?

,, २—संख्या के बहुबचनों और उनके पीछे औ बढ़ने से क्या२ अर्थ होते हैं ?

पच्चीसवाँ पाठ २५।

कृत्प्रत्ययान्त शब्दों का प्रयोग।

कतरनी कहां है। वुह धमकी नही सहता।

कृत्प्रत्ययान्त शब्दों में से करणवाची और भाववाची से प्रातिपदिक मात्र का बोध होता है और वे प्रातिपदिकों के समान ही प्रयुक्त होते हैं।

यह पीटताहुआ सिपाही कौन है ?

छूटा हुआ कैदी कब गया ?

भागा हुआ लड़का कहां है ?

कर्तृवाचक शब्द और अकर्मिका तथा जाना अर्थवाली क्रियाओं के कर्म वाचक शब्दों से कर्त्ता का हो बोध होने से वे गुप्त वा प्रगट कर्त्ता के ही विशेषण होते हैं—

काटा हुआ पेड गिरा। पीटा हुआ गधा भागा।

सकर्मिका क्रियाओं के कर्मवाचक शब्दों से कर्म का बोध होता है इसी से वे विद्यमान अथवा अविद्यमान कर्म के विशेषण होते हैं।

यौगिका क्रिया वाची शब्द जिस रीति पर प्रयुक्त होते हैं वह पूर्व ही कहा गया—

तलवार से मारा हुआ सिंह। कुर्सी पर बैठा हुआ राजा।

जिस प्रकार क्रियाओं के साथ में कर्ता कर्म उपकर्म इत्यादि आते हैं उसी प्रकार कृत्प्रत्ययान्त शब्दों के साथ में भी आते हैं अन्वय करने में उनको यथोचित कर्ता कर्म इत्यादि कहि कर कृत्प्रत्ययान्त शब्दों में मिलाकर फिर कर्ता कर्म आदि वाक्य के सम्बन्धानुसार कहिना होता है, जैसे ऊपर के वाक्य की अन्वय इस रीति पर होगी।

तलवार···कर्म
से···कर्मप्रवचनीय } कर्म और कर्मप्रवचनीय मिलकर उपकर्म।

मारा हुआ क्रिया···क्रिया और उपकर्म मिलकर विशेषण;

सिंह···विशेष्य···विशेषण और विशेष्य मिल कर।

*　*　*　*　*　*　*

सिंह की डपट बुरीहोती है।

माली से गुलाब की कतरनी मांगो।

करणवाची और भाववाची शब्दों के साथ में ऊपर कहे हुए के अनुसार कर्म आदि नहीं मिलते और जब मिलते भी हैं तो उनके पीछे करण वा भाववाची के लिङ्ग और वचन के अनुसार "का की के कीं" लगाकर करणवाची आदि के पूर्व बोले जाते हैं।

उदाहरण।

अगले वाक्यों की अन्वय करो—

मैंने दौडते हुए घोड़े को देखा। भूला हुआ मनुष्य गांउ में रहा। मुहर्रिर ने लिखे हुए खत को भेज दिया। निकाला हुआ नौकर फिर आया। मैं एक गिरते हुए पत्थर को देखता हूँ। अध्यापक ने पढ़ते हुए विद्यार्थी को देखा। राजा ने वधिक से पीछा किये हुए हिरन को बचाया। गौमुखी से निकली हुई गङ्गा हरद्वार को आती है। मैं दौडते हुए सिंह की पैछड को सुन्ता हूँ। राजा ने रक्षा करने वाले पुरुषों को बुलाया। तुम पुत्रों को काशी में न्याय के पढ़ने को भेजो। यह सब विद्वानों से मानी हुई बात है। पेड को काटता हुआ मनुष्य नगर में रहता है। डाक-टर ने मेज़ पर पडा हुआ नश्तर लिया। तोप की धमक सुना-ई देती है।

प्रश्न १—कर्तृवाचक कर्मवाचक करण वाचक और भाववा-चक कृत्प्रत्ययान्त शब्द वाक्यों में किस रीति पर मिलते हैं?

,, २—कृत्प्रत्ययान्त शब्दों के साथ में कर्त्ता कर्म आदि किस रीति पर मिलते हैं और करण और भाववाची शब्दों में क्या विशेष होता है?

छब्बीसवाँ पाठ २६ ।

पूरक—विशेष्य रहित विशेषण ।

मल्लू थका हुआ आया । नत्थू अकेला भागा ।
सिपाही गाता हुआ चला ।

कभी ऐसे शब्द जो वस्तुतः उद्देश्य के विशेषण हों इस रीति पर प्रयुक्त होते हैं कि उनके हेतु से उद्देश्य के अर्थ के विस्तार में कोई भेद नहीं होता किन्तु क्रिया के कार्य के समय उद्देश्य की दशा मात्र ज्ञात होती है, ऐसेही शब्दों को उद्देश्य का विशेषण नहीं कहते किन्तु पूरक कहि कर विधेय में मिलाते हैं, जैसे ऊपर के प्रथम वाक्य को अन्वय इस रीति पर होगी कि—

मल्लू…उद्देश्य ।
थका हुआ…पूरक } पूरक और क्रिया मिलकर विधेय ।
आया…क्रिया }
उद्देश्य और विधेय मिलकर वाक्य ।

वुह सोता हुआ आया । वुह पढ़कर गया ।

यौगिकाक्रियाओं से भी कर्त्ता वा उद्देश्य का ही कार्य द्योतित होता है इसी से वे भी पूरक कहे जासक्ते हैं, भेद केवल इतना होता है कि यौगिकाक्रियाओं से कार्य्य का मुख्य क्रिया के कार्य्य से पूर्व पर इत्यादि करना पाया जाता है और पूरक से केवल उद्देश्य की दशा मात्र का बोध होता है ।

अप्सरा गाते हुए आई। अप्सरा गाती हुई आई।
कनही नहाये हुए आता है। कनही नहाया हुआ आता है।

कर्तृवाचक और कर्मवाचक कृत्प्रत्ययान्तशब्द भी क्रियाओं के साथ में दो रूप से आते हैं उन्में से एक में "आ" होता है, इससे उद्देश्य की दशा मात्र ज्ञात होती है और इसी से बुह पूरक होते हैं, दूसरे में आ के स्थान पर ए आता है इस से मुख्य क्रिया के काल से पूर्व पर इत्यादि कार्य का करना पाया जाता है इसी से वे यौगिकक्रिया होते हैं। यह भेद सूक्ष्म है और भली भांति समझ लेना उचित है।

अच्छेसदा सुखी रहते हैं। झूठे की बात कोई नही मान्ता।

वहुत स्थानों पर विशेषण वाची शब्द विशेष्यों के विना ही बोले जाते हैं ऐसी दशा में यातौ इन्को स्वतः प्रातिपदिक मान कर उद्देश्य इत्यादि कहिना चाहिये अथवा उनके पीछे छिपा हुआ विशेष्य मिलाकर पूरा कर लेना चाहिये—जैसे ऊपर के उदाहरणों में यातौ अच्छे और झूठे को आप उद्देश्य कहिना चाहिये अथवा उनके पीछे मनुष्य शब्द छिपा हुआ विशेष्य मिला लेना चाहिये।

उदाहरण।

अगले वाक्यों की अन्वय करो—

चोर भागता हुआ आया। आम तोते से आधा खाया हुआ गिरा। रेलगाढ़ी सीटी देती हुई चलती है। उसने रोते हुए कहानी को कहा। मैं कल्य अकेला आया। डाकू अकेलों को लूट लेते हैं। देवदत्त नंगा फिरता है। कल्लू लड़ता फि-

रता है । यह आठ आने बचे हुए हैं । मल्लाह पैरता हुआ मछलियों को पकड़ता है । रामने पेड़ के पीछे छिपे हुए बालि को मारा । मैं पुस्तक को लेटा हुआ पढ़ता हूँ । चाकू मेजपर पड़ा मिलैगा । लड़का हंस्ता हुआ आया । द्वारिका तरकारी लाता हुआ पहुँचा । विद्यार्थी पुस्तक पढ़ता हुआ सोगया । नौकर बातें करते हुए घर को गया । पोदीना सिंचा हुआ भी नहीं बढ़ता । छाता टूटा हुआ पड़ा है । घड़ी विगड़ी हुई रःखी है। चील बोलते हुये उड़ती है । छप्पर छाबा हुआ जल गया ।

प्रश्न. १—उद्देश्य के विशेषण अन्य किसी रीति पर भी प्रयुक्त होसक्ते हैं या नहीं, और यदि होसक्ते हैं तो उस दशा में उनको क्या कहते हैं ?

प्रश्न. २—यौगिक क्रिया और पूरक में क्या भेद होता है और यदि कर्तृवाचक अथवा कर्मवाचक कृत्प्रत्ययान्त शब्द इन दोनों रीतियों पर प्रयुक्त होते हैं तो उनके क्या२ स्वरूप होते हैं ?

प्रश्न. ३—जब विशेष्य के बिनाही विशेषण बोले जावें तो अन्वय कैसे होती है ?

सत्ताईसवाँ पाठ २७ ।

क्रिया विशेषण ।

मल्लू तेज़ है । कल्लू बहुत तेज़ है,
यज्ञदत्त आता है । ब्रह्मदत्त शीघ्र आता है,

ऊपर के लिखे हुए वाक्यों में तेज़ और आता है शब्दों

का जो कुछ विस्तार है उसकी अपेक्षा बहुत और शीघ्र शब्द मिल जाने से विस्तार कम हो जाता है।

"जिन शब्दों से किसी गुणवाची शब्द अथवा किसी क्रिया के अर्थ का विस्तार कम होजावै उनको **क्रिया विशेषण** कहते हैं, इसी से बहुत और शीघ्र शब्द क्रिया विशेषण हैं।

अन्वय करने में क्रिया विशेषण गुणवाची शब्द अथवा क्रिया में मिलाये जाते हैं, जैसे ऊपर के प्रथम वाक्य की अन्वय इस रीति पर होगी कि—

कल्लू—उद्देश्य।

बहुत—क्रिया विशेषण } क्रिया विशेषण और गुणवाची
तेज़—गुणवाची } मिलकर पूरक है।

हैं-खण्डिता क्रिया-खण्डिता क्रिया और पूरक मिलकर विधेय।

उद्देश्य और विधेय मिलकर वाक्य।

क्रिया विशेषण पाञ्च प्रकार के होते हैं,—(१) गुणवाचक (२) स्थान वाचक (३) कालवाचक (४) भाववाचक और (५) निषेध वाचक।

कनहो शीघ्र आता है। नत्थू देर से लिखता है।

शीघ्र इत्यादि शब्दों से क्रिया इत्यादि के होने का प्रकार ज्ञात होता है इसी से इनको **गुणवाचक** क्रिया विशेषण कहते है, इस अर्थ में जब भाववाची शब्द बोले जाते हैं तो उनके पीछे "से" कर्म प्रवचनीय भी बोला जाता है।

कृष्ण यहां बैठा है। तुम कहां गये थे।

वहां यहां इत्यादि शब्दों से क्रिया के होने के स्थान का बोध होता है इसी से उनको **स्थानवाचक** क्रिया विशेषण कहते हैं।

कल्लू अब आता। मुरली कब बोला।

अब, जब इत्यादि शब्दों से समय का बोध होता है, इसी से उनको **कालवाचक** क्रिया विशेषण कहते हैं।

चरवाहा बैलों को बहुत पीटता है।

बालक को खिलौने से कम प्यार है।

बहुत कम इत्यादि शब्द किसी क्रिया अथवा विशेषण के अर्थ के विस्तार को बताते हैं, उनको **भाववाचक** क्रिया विशेषण कहते है।

तू वहां न जाना। चौबे कल्य नहीं आया।

न नहीं मत इत्यादि शब्दों से निषेध अर्थ पाया जाता है, इनको **निषेधवाचक** क्रिया विशेषण कहते हैं।

बेनो दिन में आया। बेनो आज आया।

कर्म और कर्मप्रवचनीय मिलकर जो उपकर्म नाम से पूर्व कहे गये वुह भी वस्तुतः क्रिया विशेषण ही होते हैं भेद केवल इतना होता ह कि उपकर्म में दो पद और क्रिया विशेषण में एक ही पद होता है।

घोड़ा बहुत तेज़ भागता है। मुक्टू बहुत साफ पढ़ता है।

क्रिया विशेषण कभी अन्य क्रिया विशेषणों में भी मिलते हैं जैसे कि ऊपर के उदाहरणों में बहुत।

उदाहरण।

अगले वाक्यों की अन्वय करो—

जल धीरे२ बहता है। माधव मधुर२ हँसता है। विद्यार्थी अच्छा पढ़ता है। निर्धन सुख से सोता है। बुद्धि शीघ्र भड़कती है। तू वहां क्यूँ जाता है। मेघ निरन्तर जल बरसता है। अध्यापक हमको नित्य पढ़ाता है। हम प्रति वर्ष काशी को जाते हैं। आलसी बहुत देर सोता है। द्वारिका ने कल्य खड़ाऊ चुराई। मैं वहां जाता हूँ। अब झूठ न बोलना। कल यहां कौन आया था। तुम न मानोगे? जल्द चलना अच्छा नहीं। वुह धीमें सांस लेता है। कबूतर बहुत ऊंचा उड़ता है।

प्रश्न. १—क्रिया विशेषण किनको कहते हैं और वे कहां२ मिलते हैं?

प्रश्न. २—क्रिया विशेषणों के कितने भेद होते हैं उदाहरण सहित बताओ?

प्रश्न. ३—क्रिया विशेषण और उपकर्मों में क्या२ भेद होता है?

अठ्ठाईस्वाँ पाठ २८।

अन्य क्रिया विशेषण।

राम के बनको जाते हुए दशरथ बहुत रोया।

सिंह के गरज ने पर सब मृग डरे।

जिन शब्दों के कर्मवाचक "ता" हुआ प्रत्ययान्त अथवा भाववाचक "ना" प्रत्ययान्त शब्द विशेषण हों उन्को कृत्प्रत्ययान्त शब्दों के पूर्व के युक्त बोलकर उक्त शब्दों के आ

के स्थान में ए कर देने और भाववाचक के पीछे पर और मिला देने से भी जो शब्द समूह बनते हैं उनको भी क्रिया विशेषण ही कहते हैं, इनमें से पूर्व से क्रिया के कार्य्य पूर्व और द्वितीय से उसी के समान काल में कार्य्य का उद्देश्य से अतिरिक्त और किसी प्रातिपदिक द्वारा होना पाया जाता है, यह बहुधा वाक्य की आदि में ही बोले जाते हैं।

अन्वय करने में इन्के पदों को विशेषण और विशेष्य कहि कर उनको मिला कर क्रिया विशेषण कहना होता है, जैसे ऊपर के वाक्य की अन्वय इस रीति पर होगी।

राम के—विशेष्य।

बनको—कर्म }
जाते हुए—क्रिया } क्रिया और कर्म मिल कर बिशेषण

विशेषण और विशेष्य मिलकर क्रिया विशेषण।

* * * * * * *

देवदत्त ने भागते हुए बिल्ली मारी।

देवदत्त के भागते हुये बड़ी हलचल हुई।

ते हुये प्रत्ययान्त यौगिका क्रिया और क्रिया विशेषण में इतना भेद होता है कि यौगिका क्रिया से उद्देश्य का ही कार्य्य और विशेषण से उद्देश्य के अतिरिक्त और किसी प्रातिपदिक का कार्य्य ज्ञात होता है।

उदाहरण।

अगले वाक्यों की अन्वय करो—

राजा के मरने पर राजभङ्ग होगया। सिपाहियों के आते

हुये चोर भाग गये । सूर्य्य के आर्द्रा में आने पर मेंह बरसता है। राजा के पृथ्वी की रक्षा करते हुये प्रजा सुखी हुई। गुरू के देखते हुये चेले लड़े। रेल के आते हुये डाक ली जाती है। पेन्सिल टूट जाने पर मैं न लिख सका। दवात के उलटा होने पर स्याही गिरी। सेब के गिरते हुये बालक दौड़े। वृक्ष के कटने पर राह होगई। सबके आने पर पंक्ति बैठी। धोबी के आने पर मैं कपड़े देउंगा। देवी के पढ़ते हुये द्वारिका खेलता रहा।

प्रश्न. १—कालादि वाची से भिन्न अन्य कोई शब्द भी क्रिया विशेषण होकर प्रयुक्त होते हैं या नहीं। वे कहां बोले जाते हैं और उनकी अन्वय कैसे होती हैं ?

प्रश्न. २—यौगिका क्रिया और क्रिया विशेषण में क्या भेद होता हैं ?

उन्तीसवाँ पाठ २९।

अमुख्य कर्म—कालादि वाचीकर्म।

मैंने कल्लू को भागते हुये देखा।

सिपाहियों ने माल को गड़ा हुआ पाया।

कभी कृत्प्रत्ययान्त तथा अन्य बिशेषण वाची शब्द जो वस्तुतः किसी क्रिया इत्यादि के कर्म के विशेषण हों इस रीति पर भी प्रयुक्त होते हैं कि उक्त कर्म के अर्थ के विस्तार में उनके हेतु से कोई भेद नहीं होता किन्तु क्रिया के होने के समय कर्म की दशा मात्र ज्ञात होती है, ऐसी दशा में कर्म को

मुख्यकर्म और उपरोक्त शब्दों को अमुख्यकर्म कहते हैं, यह अमुख्यकर्म क्रिया का अङ्ग सा होकर उसके पूर्वही बोले जाते हैं जैसा कि पूर्व भी विधान होचुका।

उसने दिन में पढ़ा। हरि रात में (बारात को) आया।

किसी काल अथवा मार्ग के परिमाणवाची शब्दों के पीछे कोई कर्मप्रवचनी बोलने से कार्य्य का उक्त कालादि के किसी अंश में होना पाया जाता है।

विष्णु मील भर भागा। द्वारिका दिन भर रोया।

जब काल अथवा मार्ग परिमाणवाची शब्दों के पीछे "भर" बोला जावै तौ कार्य्य का उस समय इत्यादि भर में होना पाया जाता है।

हरि ने सात दिन में रामायण पढ़ी।
रामभरोस ने तीन महीने में परीक्षा दी।

किसी काल अथवा मार्ग परिमाणवाची शब्द के पीछे "भरमें" अथवा उसके पूर्व कोई संख्यावाची शब्द और उसके पीछे कोई कर्मप्रवचनीय बोलने से कार्य्य का उस समय इत्यादि में पूरा होना भी पाया जाता है।

राम दो दिन में आया। द्वारिका सात दिन में नहाया।

कभी कालवाची शब्द के पूर्व कोई संख्या और उसके पीछे कोई कर्मप्रवचनीय बोलने से कार्य्य का उतने समय के अनन्तर करना भी पाया जाता है।

उदाहरण।

अगले वाक्यों की अन्वय करो—

साईस ने घोड़े को दौड़ते हुये देखा। मुन्ना ने हस्नू को थका हुआ छोड़ा। उन्होंने महीधर को राजा बनाया। मुनि राजा को देवता बताते हैं। पाठशाला एक महीने में खुलैगी। दिन में लू चलती है। राति को शरदी होती है। रात भर आंधी चली। दो घड़ी युद्ध हुआ। कङ्कड़ मील भर बिछ गया। रेल रात में आती है। छकड़ा पन्द्रह दिन में लखनौ पहुँचता है। मालिक खेत को बोता हुआ देखता रहा। सिपाही ने चोर को कूमिल लगाते हुए पकड़ा। मैंने बुड्ढे मनुष्य को रोते हुए देखा। वह मुझ को पत्र लिखते हुए देखता रहा। मैं एक पत्थर को गिरता हुआ देखता हूँ। शिकारी ने सिंह को झाड़ी में छिपा हुआ पाया। अध्यापक ने विद्यार्थी को पुस्तक पढ़ते हुये छोड़ा। अयोध्या बासियों ने राम को बन से आते हुये देखा। उसने कहारों को मटके ढोते हुये देखा। रामभरोस को लिखते हुये छोड़कर रामसुन्दर चले गये। देवदत्त को रजाई ओढे हुये देखकर मैंने कुछ न कहा। मैं करीम को नीब के नीचे बैठा हुआ देखता हुआ घर को गया।

प्रश्न. १—जब ऐसे शब्द जिनसे कर्म का गुण ही ज्ञात हो उस्के अर्थ को नियत न करें तौ उनको क्या कहते हैं और उनको अन्वय कैसे होती है ?

प्रश्न. २—कालवाची तथा मार्ग परिमाणवाची शब्द किस२ रीति पर प्रयुक्त होते हैं और उनका अर्थ कैसे२ होता है ?

विक्रेय पुस्तकों का सूची पत्र ।

अर्थप्रकाशिका बड़ी	।।।)
,, छोटी	।=)
वैयाकरण रत्न	।।।)
लघुसंस्कृत व्याकरण बड़ा	=)
,, छोटा	-)
अन्वयदीपिका बड़ी	≡)
,, छोटी	-)
यजुर्वेदीय संध्याविधिः	)।।
वर्णपरिचायिका	)।।।
भाषाप्रदीप प्रथम भाग	=)
Principles of Translation Part I.	≡)
Analitical Primer Part I.	-)
Ditto. Part II.	-)।।
Applied Grammar	।।=)

150683

कटिहा रामचरण, रघुनन्दन प्रसाद
ब्रह्मपुरी, बांसबरेली ।